पञ्च कल्याणक : क्या, क्यों, कैसे ?

प्रश्न १ – पञ्च कल्याणक महोत्सव क्या है ?

उत्तर – स्वयं आत्म–कल्याण के मार्ग पर चल कर, जन्म–मरण से रहित होनेवाले एवं हमें भी आत्म–कल्याण का मार्ग प्रशस्त करनेवाले तीर्थङ्कर परमात्माओं के जीवन की वे पाँच घटनाएँ – जो गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और मोक्ष के रूप में जानी जाती हैं, **पञ्च कल्याणक** कहलाती हैं।

अनादि–अनन्त काल–प्रवाह में चौथे काल में होनेवाले चौबीसों तीर्थङ्करों के जीवन की उक्त घटनाओं को देव एवं उस काल के मनुष्य, अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं और स्वयं भी आत्महित में लगने की प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

वर्तमान में साक्षात् तीर्थङ्कर परमात्माओं का विरह होने से, उनके बिम्ब पर स्थापना–निक्षेप से इन पाँचों कल्याणकों की विधि सम्पन्न की जाती है।

प्रश्न २ – पञ्च कल्याणक तो एकान्त में भो किया जा सकता है, उसके लिए भीड़ जुटाने की अथवा प्रचार–प्रसार की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर – सभी आत्मार्थीजन पञ्च कल्याणक की विधि को प्रत्यक्ष देखकर अपने परिणाम उज्ज्वल बनाएँ — यही इसका उद्देश्य है। इसके पीछे का मनोविज्ञान यह है कि लौकिकजन, जब तक अपनी आँखों से किसी घटना को होते हुए न देख लें, उन्हें उसका विश्वास नहीं होता, अत: यह उत्सव, अत्यन्त उत्साह के साथ आम जनता के सामने मनाया जाता है।

प्रश्न ३ – पञ्च कल्याणक को हम किस प्रकार समझ सकते है ?

उत्तर – पञ्च कल्याणक को हम अन्तर्बाह्य दोनों दृष्टियों से समझ सकते हैं –

आत्महित में इस महोत्सव को निमित्त बनाना, इसका आध्यात्मिक आभ्यन्तर स्वरूप है, जो किसी भी प्रकार से विस्मृत करने योग्य नहीं है। इस उद्देश्य को मुख्य रख कर पञ्च कल्याणक की आभ्यन्तर विधियाँ और बाह्य प्रदर्शन किया जाता है।

आभ्यन्तर विधियाँ वे होती हैं, जो प्रतिष्ठाचार्य बिना प्रदर्शन के सम्पन्न करते हैं और बाह्य विधियाँ वे होती हैं, जो जन साधारण को मञ्च के माध्यम से दिखाई जाती हैं।

आभ्यन्तर विधियों में शान्ति–जाप, अङ्ग–न्यास आदि करना तथा सूरि–मन्त्र, प्राण–प्रतिष्ठा–मन्त्र इत्यादि प्रदान करना हैं और बाह्य विधियों में झण्डारोहण, शोभायात्रा, स्वप्नों का प्रदर्शन, पाण्डुकशिला पर अभिषेक, पालनाझूलन, इन्द्रसभा, राजसभा, दीक्षा, आहारदान, दिव्यध्वनि प्रदर्शन, निर्वाणकल्याणक का प्रदर्शन इत्यादि है।

इन सभी विधियों का पर्याप्त परिचय तो आप **पञ्च कल्याणक के साक्षात् दर्शन** से ही प्राप्त कर सकते हैं, तथापि हम यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण विधियों एवं तत्सम्बन्धी विशेष जानकारियाँ प्रश्नोत्तरों के माध्यम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न ४ – सामान्यतया भगवान आदिनाथ या नेमिनाथ के पञ्च कल्याणक ही होते हैं, भगवान महावीर या अन्य तीर्थंकरों के पञ्च कल्याणक क्यों नहीं किये जाते हैं?

उत्तर – तीर्थंकर भगवान आदिनाथ या नेमिनाथ का जीवन, घटना–बहुल होने के कारण पंच कल्याणकों में प्रदर्शन योग्य कार्यक्रम बन जाता है तथा पूर्ववर्ती आचार्यों ने भी पंच कल्याणकों का वर्णन भगवान आदिनाथ की मुख्यता से किया है, अतः सामान्यतया उनके ही पंच कल्याणक कराये जाते हैं, लेकिन अन्य तीर्थंकरों के पंच कल्याणकों का निषेध कदापि नहीं किया गया है।

दसरी बात यह भी है कि यदि हम किसी भी तीर्थङ्कर के कल्याणक मनाएँ – यह **प्रश्न** तो सदा रहेगा ही कि इनका ही क्यों, उनका क्यों नहीं; अतः किन्हीं भी तीर्थङ्कर का कल्याणक मनाकर अन्ततः तो उस पक्रिया का ही प्रदर्शन करना है, जिससे यह ज्ञात हो सके कि किस प्रकार पामर से परमात्मा या नर से नारायण बना जाता है।

इसी प्रकार भगवान महावीर का जीवन विशेष घटना प्रधान नहीं है, लेकिन फिर भी तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ के पंच कल्याणक में भगवान महावीर के पूर्व भवों और वर्तमान भवों का सम्मिश्रण करके विशेष कार्यक्रम तैयार किये थे और वह पंच कल्याणक बहुत सफल भी हुआ था, उसके बाद अन्यत्र अनेक जगहों पर भगवान महावीर के पंच कल्याणक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

प्रश्न ५ – सामान्यतया सभी पञ्च कल्याणकों में सब कुछ वही का वही होता है, अतः बार–बार पञ्च कल्याणकों में जाने की क्या आवश्यकता है ?

उत्तर – मुख्य बात तो यह है कि पञ्च कल्याणकों को देखने से हमारे परिणाम विशुद्ध होते हैं तथा जब इन्द्रादि देवतागण भी स्वर्ग से आकर पंच कल्याणक उत्सव बारम्बार मनाते हैं तो हमें उसमें जाने का और उन क्रियाओं को देखने का भाव बारम्बार क्यों नहीं आएगा। जैसे, लोक में हमें अपने प्रियजनों का जन्म–दिवस आदि बारम्बार मनाने का भाव आता है, उसी प्रकार हमें भी अपने इष्ट तीर्थंकर भगवन्तों के पंच कल्याणक आदि देखने का भाव आता है और आना चाहिए।

पंच कल्याणकों में अकेले पूजा–पाठ आदि विधि–विधान ही नहीं होते, बल्कि वहाँ तीर्थंकर भगवन्तों के द्वारा प्रदत्त भवतापहारी वीतरागी तत्त्वज्ञान को प्राप्त करने की पिपासा भी वीतरागी गुरुओं और मनीषी विद्वानों के आध्यात्मिक व्याख्यानों के माध्यम से प्राप्त होती है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने तो कहा है कि **'पंच कल्याणक का साक्षात् दर्शन, सम्यग्दर्शन का निमित्त है।'**

प्रश्न ६ – आचार्य-अनुज्ञा-विधि का क्या महत्त्व है ?

उत्तर – पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा का मुख्य कर्णधार अथवा सूत्रधार, प्रतिष्ठाचार्य को माना गया है; अतः कार्यक्रम के प्रारम्भ में 'आचार्य अनुज्ञा' के द्वारा प्रतिष्ठाचार्य से यजमान, यज्ञनायक अथवा प्रतिष्ठाकारक व्यक्ति या समाज निवेदन करती है और प्रतिष्ठाचार्य प्रतिष्ठा करने हेतु स्वीकृति प्रदान करते हैं। प्रतिष्ठा पाठों में प्रतिष्ठाचार्य को 'आचार्य' शब्द से उल्लिखित किया गया है। इस विधि का विस्तृत उल्लेख प्रतिष्ठा ग्रन्थों में पाया जाता है।

प्रश्न ७ – यजमान, यज्ञनायक या प्रतिष्ठाकारक कैसा होना चाहिए ?

उत्तर – 'प्रतिष्ठा प्रदीप' में कहा है – 'न्यायोपजीवी, गुरुभक्त, अनिन्द्य, विनयी, पूर्णाङ्ग, शास्त्रज्ञ, उदार, अनपवाद व उन्मादरहित, राज्य व निर्माल्य द्रव्य का हर्ता न हो, प्रतिष्ठा में सम्पत्ति का व्यय करनेवाला, कषायरहित तथा धार्मिक व्यक्ति, यज्ञनायक के योग्य होता है।'

प्रश्न ८ – प्रतिष्ठाचार्य के क्या लक्षण है ?

उत्तर – प्रतिष्ठा प्रदीप के अनुसार – 'स्याद्वाद विद्या, में निपुण, शुद्ध उच्चारण वाला, आलस्य-रहित, स्वस्थ, क्रिया-कुशल, दया-दान-शीलवान, इन्द्रिय-विजयी, देव-शास्त्र-गुरु भक्त, शास्त्रज्ञ, धर्मोपदेशक, क्षमावान, समाज-मान्य, व्रती, दूरदर्शी, शङ्का-समाधान-कर्ता, उत्तम कुल वाला, आत्मज्ञ, जिनधर्मानुयायी, गुरु से मन्त्र-शिक्षा-प्राप्त, अल्प-भोजी, रात्रि-भोजन का त्यागी, निद्रा-विजयी, निःस्पृही, पर-दुःख-हर्ता, विधिज्ञ और उपसर्ग-हर्ता **प्रतिष्ठाचार्य** होता है।'

प्रश्न ९ – शान्ति-जाप का क्या महत्त्व है ?

उत्तर – बड़े-बड़े प्रतिष्ठा, विधान आदि कार्यों की निर्विघ्न-समाप्ति की भावना से शान्ति-जाप का आयोजन किया जाता है, इससे जाप में बैठने वाले को विषय-कषायों से दूर रहने तथा अपनी आत्मा के निकट रहने का अवसर मिलता है। साथ ही जाप में बैठने वाले को आवश्यक नियम आदि का पालन करना अनिवार्य माना गया है। इसमें निर्दिष्ट मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण, शुद्ध पठन-पाठन करने से स्वयमेव अमङ्गल दूर होते है तथा महत्कार्य निर्विघ्न और शान्ति-पूर्वक सम्पन्न होते हैं।

प्रश्न १० – मङ्गल-कलश-स्थापना क्यों की जाती है ?

उत्तर – पञ्च कल्याणक में ही नहीं, प्रत्येक माङ्गलिक कार्य में कलश-स्थापना की जाती है क्योंकि भारतीय संस्कृति में कलश का माङ्गलिक माना गया है; अतः उसमें मङ्गल द्रव्यों का क्षेपण करके, उसकी स्थापना मण्डल-विधान आदि श्रेष्ठ स्थानों पर की जाती है। कलश-स्थापना के माध्यम से माङ्गलिक कार्य का सङ्कल्प किया जाता है। घटयात्रा आदि के समय वेदी-शुद्धि, मन्दिर-कलश-शुद्धि, शिखर-ध्वज-शुद्धि आदि के लिए मन्त्रित जल भी

कलशों में ले जाते हैं। जन्माभिषेक के समय कलशों में क्षीरसागर के जल की स्थापना करके ले जाया जाता है क्योंकि साक्षात् तीर्थङ्कर का जन्माभिषेक क्षीरसागर के जल से ही होता है।

प्रश्न ११ – धर्म-ध्वजारोहण क्यों कराया जाता है ?

उत्तर – जिस प्रकार राष्ट्रध्वज राष्ट्र के गौरव का प्रतीक होता है; उसी प्रकार धर्मध्वज भी जिनधर्म के गौरव का प्रतीक है, जिनशासन की महिमा का सूचक है। जिस प्रकार भारत देश का ध्वज या झण्डा तिरङ्गा है; उसो प्रकार जनधर्म का ध्वज 'पचरङ्गा' माना गया है। जैनध्वज के पाँच रङ्ग – ऊपर से नीचे की ओर क्रमशः सफेद, लाल, पीला, हरा और नीला है। 'इन रङ्गों को गृहस्थों के पञ्चाणुव्रत का सूचक भी माना गया है' – ऐसा पण्डित नाथूलालजी शास्त्री ने प्रतिष्ठा प्रदीप में लिखा है।

आदरणीय बाबू श्री जुगलकिशोरजी 'युगल' के शब्दों में कहें तो —

'जैसे लौकिक सुख-शान्ति के लिए लोकशासन का एक विधान होता है, जिसके अन्तर्गत नियन्त्रित एवं अनुशासित लोक-जीवन सुखी रहता है; उसी प्रकार लोकोत्तर आत्मशान्ति क लिए सन्तों ने लोकोत्तर-शासन स्वीकार किया है, जिसका एक सार्वदेशीय एवं सार्वकालिक विधान होता है और उस शासन का प्रतीक, विशिष्ट 'ध्वज' होता है।

जैनदर्शन एक ऐसा ही शासन है, जिसने विश्व के अणु-अणु की प्राकृतिक स्वतन्त्रता के आधार पर आत्मा की परम शान्ति एवं स्थायी मुक्ति का विधान निर्दिष्ट किया है। दिगम्बर जैन श्रमण, उस मुक्ति के विधान का अनुशीलन करते हुए जीवन में उसे परिणति देते हैं; अतः 'जैन-ध्वज' भी उन्हीं अरहन्त, सिद्ध, आचार्य उपाध्याय एवं साधु – इन पाँच प्रकार के श्रमणों के प्रतीक के रूप में स्वीकृत है।

ध्वजारोहण एवं ऐसे ही अन्य सभी समारोह एवं अनुष्ठानों के पवित्र अवसरों पर श्रमणों की पावनता को आत्मसात् करने के लिए इन्हीं पाँच श्रमणों का स्मरण एवं वन्दन किया जाता है।'

यही कारण है कि धर्मध्वज को शिवपुर-पथ-परिचायक, दुःख-हारक, सुख-कारक, दया-पवाहक, भविजन-तारक, कर्म-विदारक, चिर-सुख-शान्ति-विधायक आदि विशेषणों से सम्बोधित किया जाता है। कहा भी है –'विश्व हितैषी वीर दुलारा, उड़े गगन में झण्डा प्यारा।'

प्रश्न १२ – विधिनायक से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – पञ्च कल्याणकों में अलग-अलग अनेक तीर्थङ्करों की प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की जाती हैं, उनमें धातु की ९ इञ्च की एक प्रतिमा को मुख्य मान कर, समस्त पञ्च कल्याणक की विधियाँ इसी प्रतिमा के माध्यम से सम्पन्न होती हैं; इस कारण इस प्रतिमा को पञ्च कल्याणक में '**विधिनायक**' घोषित किया जाता है। **गर्भकल्याणक** के समय यही प्रतिमा 'मञ्जूषा' में रखी जाती है। **जन्मकल्याणक** के समय इसी प्रतिमा का सुमेरुपर्वत पर ले जाकर १००८ कलशों द्वारा पाण्डुक-शिला पर **जन्माभिषेक** होता है, पश्चात् इसी प्रतिमा को

सुन्दर-सुन्दर सजीले राजषी वस्त्र पहनाते हैं। **दीक्षाकल्याणक** में इसी प्रतिमा को दीक्षा-विधि के माध्यम से मुनिराज का स्वरूप प्रदान करते हैं। **कवलज्ञानकल्याणक** के बाद इसी प्रतिमा को समवसरण में विराजमान करते हैं। तथा **मोक्षकल्याणक** के समय मोक्ष-विधि भी इसी प्रतिमा पर दर्शायी जाती है।

यद्यपि अन्य प्रतिष्ठा योग्य प्रतिमाओं पर संक्षेप में विधि की जाती है, तथापि इसी विधिनायक प्रतिमा पर अंकित चिह्न के आधार पर तीर्थंकर के नाम का चयन करके पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के नाम का निर्धारण किया जाता है। जैसे, तीर्थधाम मंगलायतन में विधिनायक भगवान श्री महावीरस्वामी और मंगलायतन विश्वविद्यालय में विधिनायक भगवान श्री आदिनाथस्वामो थे।

प्रश्न १३ - मूलनायक प्रतिमा किसे कहते हैं ?

उत्तर - प्रत्येक मन्दिर की प्रमुख प्रतिमा को मूलनायक प्रतिमा कहा जाता है तथा मन्दिर का नामकरण इसी मूलनायक प्रतिमा के आधार पर किया जाता है। जैसे, लन्दन में स्थित जिन -मन्दिर के मूलनायक भगवान श्री महावीरस्वामी हैं और उन्हीं के नाम पर मन्दिर का नामकरण भी है।

प्रश्न १४ - जिस प्रतिष्ठित प्रतिमा के सान्निध्य में सम्पूर्ण पञ्च कल्याणक की विधि सम्पन्न होती है, उसे क्या कहते हैं ?

उत्तर - प्रतिष्ठा महोत्सव में इस पूर्व प्रतिष्ठित प्रतिमा का विशेष महत्त्व होता है। इस प्रतिष्ठित प्रतिमा के सान्निध्य म अथवा इनकी अध्यक्षता में ही समस्त विधियाँ सम्पन्न होती हैं; अत: इन्हें **विधि-अध्यक्ष** भी कहते हैं। पञ्च कल्याणक के प्रारम्भ में इस विधि-अध्यक्ष प्रतिमा एवं नित्य-नियम दर्शन-अभिषेक-पूजन हेतु आवश्यक एक और अन्य प्रतिष्ठित प्रतिमा को **श्री जिनेन्द्र रथयात्रा** के माध्यम से धूमधाम के साथ प्रतिष्ठा मण्डप में लाया जाता है तथा **विधि-अध्यक्ष प्रतिमा** की शरण में विधिनायक, मूलनायक तथा अन्य प्रतिष्ठेय प्रतिमाओं को रखा जाता है।

प्रश्न १५ - रत्न-वृष्टि का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - प्रत्येक तीर्थङ्कर के जन्म से 15 माह पूर्व से ही सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर द्वारा उनके जन्म-स्थान के नगर में रत्नों की वर्षा होती है। इसी की सूचनार्थ हम भी पञ्च कल्याणकों में कुबेर के माध्यम से रत्न-वृष्टि करवाते हैं।

प्रश्न १६ - सोलह स्वप्न का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - जिस दिन तीर्थङ्कर का जीव, अपनी पूर्व पर्याय को छोड़ कर, तीर्थङ्कर पर्याय में आता है, उसकी पूर्व रात्रि को तीर्थङ्कर की माता सोलह शुभ स्वप्न देखती हैं - ऐसा ही नियोग है। इन स्वप्नों का फल, वे प्रात:काल तीर्थङ्कर के पिता से पूछती है और वे उन स्वप्नों का

शुभ फल बता कर घोषणा करते हैं – 'हे त्रिलोकीनाथ की माता! आपके गर्भ में तीन लोक के जीवों को मुक्तिमार्ग का सन्देश देने वाला पुत्र जन्म लेने वाला है।'

– यह सुन कर माता को अतिशय आनन्द उत्पन्न होता है और इसी आनन्दातिरेक की अवस्था में उनके उदर में तीर्थङ्कर का जीव, गर्भ धारण करता है। यही कारण है कि उक्त सोलह स्वप्नों का प्रदर्शन एवं उनका फल, प्रत्येक पञ्च कल्याणक म प्रदर्शित किया जाता है।

प्रश्न १७ – गर्भकल्याणक के दिन घटयात्रा क्यों निकाली जाती है ?

उत्तर – जिस प्रकार माता के गर्भ में तीर्थङ्कर का जीव आता है तो उसके छह माह पूर्व से ही अष्ट देवियाँ, माता की सेवा–सुश्रुषा के लिए आ जाती हैं तथा उनकी शुद्धि आदि सर्व कर्म करती हैं; उसी प्रकार जिस वेदी पर भगवान विराजमान होंगे, उस वेदी की शुद्धि, मन्दिर–कलश, शिखर, ध्वज आदि की शुद्धि भी गर्भकल्याणक के पावन अवसर पर ही सम्पन्न होती है। गर्भकल्याणक के साथ इस बाह्य शुद्धता का भावनात्मक सम्बन्ध है।

प्रतिष्ठा–मण्डप से जिनमन्दिर तक वेदी–शुद्धि हेतु शुद्ध मन्त्रित जल, जिन कलशों में लेकर जाते हैं, उन कलशों को जिस यात्रा में सौभाग्यवती स्त्रियाँ तथा कुमारी बालिकाएँ, धारण करके चलती हैं, उसे ही 'घटयात्रा' कहते हैं।

प्रश्न १८ – माता–दवी की चर्चा से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – जिस माता के गर्भ में सम्पूर्ण जगत् को दिव्यध्वनि के द्वारा उपदेश देने वाला तीर्थङ्कर का जीव विराजमान हो, उसके हृदय में कैसी उमङ्गें होती हैं तथा उस सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा माता के कैसे आध्यात्मिक विचार होते हैं ? – इनका प्रदशन इस चर्चा में कराया जाता है; इसमें अष्ट देवियाँ तथा छप्पन कुमारियाँ, माता से तत्त्वचर्चा करती हैं और माता अपने मुखारविन्द से उनका समाधान करती ह – यही इस चर्चा का मार्मिक बिन्दु है।

प्रश्न १९ – माता–पिता, इन्द्र–इन्द्राणी, राजा–रानी आदि की क्या पात्रताएँ हैं ?

उत्तर – जो प्रतिष्ठाकारक (समाज आदि) के प्रतिनिधि पूजक, सुन्दर, सद्‌गुणवान, युवा, आभरण–भूषित, श्रद्धावान, निष्पाप, अशुद्ध भोजन–पान रहित होते हैं, वे इन पदों के योग्य होते हैं। अन्य तात्कालिक नियम, कार्य आदि उन्हें प्रतिष्ठाचार्य द्वारा दिये जाते हैं।

प्रश्न २० – इन्द्रसभा और राजसभा का क्या महत्त्व है ?

उत्तर – जब कोई तीर्थङ्कर जैसा महापुरुष, इस भूमण्डल पर अवतरित होता है तो सम्पूर्ण भूमण्डल उससे प्रभावित हो जाता है। स्वर्ग में देवता तथा मध्यलोक में राजा–चक्रवर्ती आदि सभो, अपने–अपने स्थान पर सभाओं में उन तीर्थङ्कर महापुरुष का गुणगान करते हैं तथा उनके गर्भ, जन्म आदि कल्याणकों में महोत्सव करने के सम्बन्ध में गहन मन्त्रणा करते हैं – यही इन्द्रसभा और राजसभा के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है।

प्रश्न २१ – नान्दी विधान तथा इन्द्र–प्रतिष्ठा–विधि क्यों करायी जाती है ?

उत्तर – 'नान्दी विधान' – यह सम्पूर्ण प्रतिष्ठा का प्रारम्भिक मङ्गलाचरण माना गया है। इसके माध्यम से 'मङ्गल–कलश–स्थापना' के बाद भगवान के माता–पिता बनने वाले सद्‌गृहस्थों का 'गोत्र परिवर्तन' कराया जाता है तथा उन्हें आचरण सम्बन्धी आवश्यक नियमों की जानकारी दी जाती है। इसी प्रकार 'इन्द्र–प्रतिष्ठा' के माध्यम से इन्द्र–इन्द्राणी बनने वाले गृहस्थों की इन्द्र–इन्द्राणियों के रूप में स्थापना की जाती है। इस विधि का इतना प्रभाव होता ह कि सम्पूर्ण प्रतिष्ठा काल में इन्द्र–इन्द्राणियों तथा माता–पिता को सूतक–पातक आदि नहीं लगते। इन्द्र–इन्द्राणियों तथा माता–पिता के इस रूप–परिवर्तन की जानकारी, नगर की समग्र जनता को होवे – इस निमित्त से 'इन्द शोभायात्रा' निकाली जाती है, जो नगर के प्रमुख मार्गों से निकलती है। इसके माध्यम से जन जन में उल्लास का वातावरण निर्मित हो जाता है।

प्रश्न २२ – यागमण्डल–विधान क्यों कराया जाता है ?

उत्तर – यागमण्डल विधान के माध्यम से पञ्च परमेष्ठी, जिन–प्रतिमा, जिन–मन्दिर, जिनवाणी (शास्त्र) और जिनधर्म – इन नव देवताओं की पूजन की जाती है। इस पूजन के माध्यम से उक्त समस्त देव–शास्त्र–गुरु का आह्वानन किया जाता है तथा पूजन–विधान के माध्यम से यह भावना की जाती है कि हे देव–शास्त्र–गुरु! हम आपके सान्निध्य में यह पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा कराना चाहते हैं; कृपया आप हमें आशीर्वाद देवें, जिससे हम शुद्ध मन–वचन–काय से यह महान् कार्य सम्पन्न कर सकें।

प्रश्न २३ – पाण्डुक–शिला का क्या महत्त्व है ?

उत्तर – जन्मकल्याणक के अवसर पर जब सौधर्म इन्द्र अपने समग्र देवता परिवार के साथ जन्मकल्याणक का उत्सव मनाने के लिए आते हैं, तब सर्व प्रथम वे शची इन्द्राणी के माध्यम से बाल तीर्थङ्कर को अनुनय करके प्राप्त करते हैं। पश्चात् जन्माभिषेक के उद्देश्य से बाल तीर्थङ्कर को ऐरावत हाथी पर विराजमान करके सुमेरुपर्वत पर ले जाते हैं। सुमेरुपर्वत पर पाण्डुकवन में उन बाल तीर्थङ्कर का 1008 कलशों द्वारा क्षीरसागर के जल से अभिषेक होता है। यह पाण्डुकशिला सनातन मानी गई है; इसी पर अनन्त तीर्थङ्करों का जन्माभिषेक हो चुका है, हो रहा है और होता रहेगा। यहीं पर जन्मकल्याणक की पूजन आदि होते हैं।

प्रश्न २४ – ताण्डवनृत्य कब होता है और यह क्या सूचित करता है ?

उत्तर – जन्माभिषेक के बाद जब तीर्थङ्कर को सौधर्म इन्द्र दैविक वस्त्र धारण कराता है और ऐरावत हाथी पर बैठ कर माता–पिता के पास राजमहल में वापस आता है और बाल तीर्थंकर को उन्हें सौंपता है तो उनके अद्‌भुत रूप को देख कर, स्वयं अचम्भित हो जाता है। तब भगवान के रूप को देखने के लिए वह सौधर्म इन्द्र, एक हजार नेत्र बनाता है और हर्षपूर्वक महा–ताण्डवनृत्य करता है, तब भी उसे तृप्ति नहीं मिलती है। ऐसी ही स्थिति सभी इन्द्रों और उपस्थित जन–समुदाय की होती है; अतः उत्साह एवं आनन्द की सूचक यह क्रिया है।

प्रश्न २५ - पालना-झूलन का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - यह एक व्यावहारिक विधि है। जिस प्रकार लोक में बालक को पालने में झुलाया जाता है; उसी प्रकार बाल तीर्थङ्कर को भी पालने में झुलाया जाता है। तीन ज्ञान के धारी बाल तीर्थङ्कर को पालने में झुलाते हुए कैसी आध्यात्मिक लारियाँ सुनायी जाती हैं, उनका मन रञ्जायमान किया जाता है - इसी उत्साहवर्धक विधि का नाम 'पालना-झूलन' है। पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के इस कार्यक्रम में सबसे अधिक उत्साह देखा जाता है और उपस्थित जन-समुदाय में प्रत्येक स्त्री-पुरुष, युवक-युवती, बालक-बालिका आदि सभी बाल तीर्थङ्कर को पालने में झुलाना चाहते हैं।

प्रश्न २६ - तीर्थङ्कर को वैराग्य कैसे आता है ?

उत्तर - यह नियम है कि प्रत्येक तीर्थङ्कर के समक्ष दीक्षाकल्याणक के पूर्व ऐसी कोई न कोई घटना घटती है, जो उनको वराग्य का निमित्त बन जाती है। जैसे, तीर्थङ्कर ऋषभदेव को नीलाञ्जना का नृत्य देखना और तीर्थङ्कर महावीर को जातिस्मरण होना, निमित्त माना गया है। वैराग्य होने के बाद उसकी अनुमोदना करने हेतु ब्रह्मस्वर्ग (ब्रह्मलोक) से अखण्ड ब्रह्मचारी लौकान्तिक देवों का आगमन होता है, पश्चात् माता-पिता की आज्ञापूर्वक स्वर्ग से समागत पालकी में तीर्थंकर का वन-गमन होता है।

प्रश्न २७ - क्या दीक्षा हेतु वन-गमन करते समय देवताओं और मनुष्यों में कोई विवाद होता है ?

उत्तर - तीर्थङ्कर के पाँचों कल्याणक मनाने हेतु स्वर्ग से देवतागण आते हैं, दीक्षा-कल्याणक के समय भी वे आते हैं। देवगण, पालकी में तीर्थङ्कर को ले जाने लगते हैं। उसी समय देवों और मानवों में यह विवाद होता है कि पहले पालकी कौन उठाए ? - इस विवाद में दोनों तरफ से अपने-अपने पक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं। अन्त में तीर्थङ्कर के पिता अथवा स्वयं सौधर्म इन्द्र यह समाधान करते है कि 'जो तीर्थङ्कर के साथ दीक्षा ले सकता है, वही पालकी उठाने का प्रथम पात्र हो सकता है।'

उसो समय यह कारुणिक दृश्य भी उपस्थित होता है कि देवता, अपनी देवपर्याय के बदले में मनुष्यों से उनकी मनुष्यपर्याय, भिक्षा में थोड़ी देर के लिए माँगते हैं, परन्तु मनुष्य किसी भी कीमत पर उसे स्वीकार नहीं करते; तब मनुष्यों को ही प्रथम अवसर पालकी उठाने का मिलता है क्योंकि मनुष्य ही संयम धारण के योग्य होते है और देव, अपनी पर्यायगत अयोग्यता से संयम धारण के योग्य नहीं माने गये हैं।

इस प्रकार यह पावन प्रसङ्ग, मनुष्यपर्याय में आत्मभान(आत्मानुभव)पूर्वक संयम धारण करने की पावन प्रेरणा प्रदान करता है।

प्रश्न २८ - आहार-दान का क्या महत्त्व है ?

उत्तर – मुनि-दीक्षा के उपरान्त बेला-तेला आदि उपवास करने के बाद मुनिराज का प्रथम पारणा आहार-दान की निर्दोष-विधि के माध्यम से होता है, उसकी विधि इस अवसर पर दिखायी जाती है। आहार-दान के माध्यम से ही दानतीर्थ की प्रवृत्ति का उदय होता है; जैसे, मुनिराज वृषभदेव का प्रथम पारणा, राजा श्रेयांस के माध्यम से हुआ था; यही कारण है कि जैसे, तीर्थंकर वृषभदेव, धर्म-तीर्थ के प्रवर्तक कहलाए, उसी प्रकार राजा श्रेयांस दान-तीर्थ के प्रवर्तक कहलाए। इस अवसर पर मुनियों की निर्दोष आहारचर्या का प्रदर्शन भी जगत् के सामने जाहिर होता है। इस प्रसंग में जनसामान्य में वैराग्य तथा भावना का अद्भुत संगम होता है।

प्रश्न २९ – अङ्कन्यास-विधि क्यों करायी जाती है ?

उत्तर – इस संस्कार-विधि को करते समय प्रतिष्ठाचार्य अतिशय उज्ज्वल परिणाम धारण करते हैं, अङ्कन्यास-विधि को करते समय प्रतिष्ठाचार्य, अपने अङ्गों में इन मन्त्रों की स्थापना करते हैं, पश्चात् मूर्ति में भो उसी प्रकार उन मन्त्रों का संस्कार करते हैं।

अङ्कन्यास-विधि के साथ-साथ तिलकदान-विधि, अधिवासना-विधि, स्वस्त्ययन-विधि, श्रीमुखोद्घाटन-विधि, नेत्रोन्मीलन-विधि, प्राण-प्रतिष्ठा-विधि, सूरिमन्त्र-विधि आदि जिन-बिम्ब-प्रतिष्ठा की मुख्य विधियाँ हैं, जिनका अतिशय महत्त्व है। 'सामान्यतया इन विधियों के मन्त्र सभी प्रतिष्ठा पाठों में समान हैं' – ऐसा पण्डित नाथूलालजी शास्त्री ने प्रतिष्ठा प्रदीप में लिखा है।

इनमें से सूरिमन्त्र आदि मन्त्र, प्राण-पतिष्ठा के सर्वोपरि मन्त्र हैं। यदि प्रतिष्ठा महोत्सव के समय कोई नग्न दिगम्बर मुनिराज, सहजरूप से अनायास उपस्थित हों तो प्रतिष्ठाचार्य, उनके सहयोग से भो इन मन्त्रों की विधि करते हैं अथवा उनको अनुपस्थिति में प्रतिष्ठाचार्य स्वयं नग्न होकर, इन विधियों को विशुद्धभाव से करते हैं।

(**नोट** – '**सूरिमन्त्र**' के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु इसी प्रतिष्ठा पाठ के परिशिष्ट में '**सूरिमन्त्र क्या है?**' – यह लेख अवश्य पढ़ें।)

प्रश्न ३० – दिव्यध्वनि का प्रसारण कैसे होता है ?

उत्तर – साक्षात् केवलज्ञान-प्राप्ति के तुरन्त बाद सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर समवसरण की रचना करते हैं, वहाँ से तीर्थंकर की दिव्यध्वनि का प्रसारण गणधरों के माध्यम से होता है। इसी प्रकार पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में केवलज्ञानकल्याणक के अवसर पर समवसरण में तीर्थङ्कर भगवान को चतुर्मुख विराजमान किया जाता है और परदे के पीछे से दिव्यध्वनि का प्रसारण किया जाता है। यद्यपि तीर्थङ्कर भगवान की दिव्यध्वनि निरक्षरी होती है और वह गणधरदेव के माध्यम से ही खिरती है, तथापि भव्यजीवों की प्रेरणार्थ उनकी व्यक्तिगत शंकाओं का समाधान प्रदर्शित किया जाता है।

प्रश्न ३१- मोक्ष-गमन की विधि किस प्रकार दिखायी जाती है ?

उत्तर - मोक्षकल्याणक के पूर्व तीर्थङ्कर प्रभु को उनके सिद्धक्षेत्र के सूचक, पर्वत आदि स्थान पर विराजमान दिखाया जाता है। पश्चात् प्रभु, योग-निरोध करके समस्त कर्मों का अभाव करके मोक्ष-गमन करते हैं - इसकी सूचना हेतु विधिनायक प्रतिमा को वहाँ से उठा कर वेदी पर विराजमान कर देते हैं तथा भगवान के नख और केशों का अग्निकुमार जाति के देव, अग्नि-संस्कार करते हैं। इस प्रकार **मोक्ष-गमन की विधि का संस्कार** किया जाता है।

प्रश्न ३२ - पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव से हमें क्या सन्देश प्राप्त होता है ?

उत्तर - इस महोत्सव में तीर्थङ्कर परमात्मा के पाँच कल्याणकों के अलावा उनके पूर्व भवों का प्रदर्शन भी किया जाता है, जिससे ज्ञात होता है कि एक जीव किस प्रकार आत्माराधना की श्रेणियाँ चढ़ता हुआ मुक्ति जैसी सर्वोच्च दशा प्राप्त कर, जगत् वन्दनीय बन जाता है। साथ ही इस महोत्सव में जिनवाणी सेवक विद्वानों के द्वारा मुक्तिमार्ग के स्वरूप का एवं उसे प्राप्त करने के उपायों का प्रतिपादन भी होता है।

इस प्रकार प्रेक्टीकल एवं थ्योरिटिकलरूप से हमें मुक्तिमार्ग का सन्देश, इस महोत्सव से प्राप्त होता है। यदि हम भी सही वस्तु-स्थिति समझ कर, उस दिशा में प्रयत्न करें तो भव-भ्रमण से छूट कर, सादि-अनन्त काल के लिए अनन्त सुखी हो सकते हैं।

हमारे तारणहार, हमारे जीवन-शिल्पी, पूज्य गुरुदेवश्री भो इस महोत्सव में पधारने हेतु सहर्ष अपनी स्वीकृति प्रदान करते थे और प्रफुल्ल होकर हजारों साधर्मियों के जनसमूह में भगवान आत्मा के अध्यात्म-सन्देशामृत का पान कराते थे। हम सभी भव्यात्माएँ, इस महोत्सव के माध्यम से संसार-परिभ्रमण से मुक्त होकर अनन्त सुखी हों - यही मंगल भावना है।

पुनः संशोधित - १३ अपल २०१४
(महावीर जयन्ति)

- **डॉ. राकेश जैन शास्त्री,** नागपुर